JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बी0एड0 स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन

शोध निर्देशक
डॉ0 रमेन्द्र तिवारी
असिस्टेण्ट प्रोफेसर
शिक्षक–शिक्षा विभाग
नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय),
प्रयागराज (उ0प्र0)

शोधछात्र
अखिलेश कुमार यादव
(शिक्षाशास्त्र)
शिक्षक–शिक्षा विभाग
नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय),
प्रयागराज (उ0प्र0)

सारांश

समस्या कथन बी0एड0 स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना है। अध्ययन में शोध विधि के लिए वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सहसम्बन्धात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है। वर्तमान अध्ययन में प्रयागराज परिक्षेत्र में स्थित विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयों में संचालित शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों में अध्ययनरत् बी0एड0 स्तर के छात्र/छात्राओं को जनसंख्या के रूप में किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन हेतु आवश्यक प्रदत्तों को प्राप्त करने के लिए स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्शन विधि का प्रयोग करके कुल 600 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया। जिसमें से 300 छात्र एवं 300 छात्राएँ का चयन किया गया है। अनुकुल हाइड, संजोत पेठे और उपिंदर धर (2002) द्वारा इमोशनल इंटेलिजेंस स्केल (ईआईएस) कूपर और सॉवाफ (1997) द्वारा फोर–कॉर्नरस्टोन मॉडल पर आधारित ''संवेगात्मक बुद्धि मापनी'' तथा हरप्रीत भाटिया एवं एन.के. चढ्ढा द्वारा निर्मित ''पारिवारिक वातावरण मापनी'' का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु एनोवा (प्रसरण विधि) तथा टी–अनुपात विधियों का प्रयोग किया गया है। विश्लेषण एवं व्याख्या उपरान्त निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये– बी0एड0 स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर पारिवारिक वातावरण का प्रभाव पाया गया।

की–वर्ड– शिक्षक–प्रशिक्षण, बी0एड0, शहरी, ग्रामीण, विद्यार्थी, संवेगात्मक बुद्धि, पारिवारिक वातावरण।

प्रस्तावना–

शिक्षा में मनुष्य की शारीरिक अभिवृद्धि और उसके शारीरिक, मानसिक, भाषायी, संवेगात्मक एवं सामाजिक विकास का अध्ययन किया जाता है। मनुष्य की शिक्षा एवं विकास में उसके मानसिक स्वास्थ्य एवं उसके समायोजन की अहम् भूमिका होती है परन्तु आज हमारे समाज में संघर्ष, अनाचार एवं अत्याचार हो रहे हैं। ऐसी परिस्थितियों में आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने जीवन को किस प्रकार सुखी एवं सन्तुष्ट बना सकते हैं जिससे हमारा शारीरिक स्वास्थ्य ही नहीं बल्कि मानसिक स्वास्थ्य भी स्वस्थ रहे क्योंकि स्वस्थ मानसिक विकास के पदों पर चलकर मनुष्य अपनी शैक्षिक उपलब्धियों के उन उद्देश्यों को प्राप्त कर सकता है जिसके लिये वो इतने अथक प्रयास कर रहा है।

बी0एड0 स्तर पर विद्यार्थियों का संवेगात्मक बुद्धि का महत्व इसलिए अधिक है क्योंकि बी0एड0 स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थी भविष्य के शिक्षक होते हैं तथा एक कुशल शिक्षक तभी हो सकता है जब वह अपने संवेगों पर जीत हासिल कर लेता है। **पैत्रा, स्वाती (2004)** के शोध परिणाम से यह पता चलता है कि संवेगात्मक बुद्धि एक संस्कृति जिसमें व्यक्ति की भावनाओं का सम्मान करके प्रत्येक व्यक्ति का आदर किया जाता है, को सहयोग करता है तथा समृद्ध बनाता है। शैक्षिक प्रबन्धन में संवेगात्मक बुद्धि बहुत अधिक सहायक होता है। जैसे प्रशासन में एक प्रशासक की योग्यता। भावनाएँ एवं संवेग, दोनों प्रतियोगी वातावरण को परिवर्तित करने के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। **दूबे, शिवेन्द्र एवं ठाकुर, जसवंत सिंह (2015)** ने शोध परिणाम में इंगित किया कि स्वास्थ्य संवेगात्मक बुद्धि के महत्वपूर्ण कारक है। **कुमार,**

प्रवीण एवं शर्मा, दिनेश (2017) के शोध अध्ययन के निष्कर्ष में इंगित किया कि– संवेगों का सही उपयोग व प्रभावी ढंग से प्रबन्धन व नियंत्रण करने की योग्यता को संवेगात्मक बुद्धि कहा जाता है। किसी सुसमायोजित, सुखी तथा सफल व्यक्ति के जीवन में सामान्य बुद्धि के स्थान पर संवेगात्मक बुद्धि अधिक महत्त्वपूर्ण तथा सार्थक सिद्ध होती है। बालकों में संवेगात्मक बुद्धि प्रस्फुटन, प्रवर्तन तथा विकास के कार्य में उनके परिजनों, साथियों, शिक्षकों, पास–पड़ोस, विद्यालय तथा जनसंचार के साधनों के द्वारा तरह–तरह से महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की जा सकती है। **पबलो एवं अन्य (2006) के शोध परिणाम,** मनोवैज्ञानिक समायोजन में संवेगात्मक बुद्धि महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। **कर्थीकेयान, पी. (2015)** ने शोध अध्ययन के निष्कर्ष में इंगित किया कि शिक्षकों द्वारा बच्चों के मध्य बौद्धिक, नैतिक, भावनात्मक के साथ सामाजिक विकास को प्रदर्शित करने एवं बढ़ावा देने में सक्षम एवं आवश्यक होना चाहिए। शिक्षकों को शैक्षिक समुदाय की जानकारी होने के साथ–साथ सहयोगियों एवं परिवार के साथ मिलकर वे केवल बच्चों को शिक्षण के लिए तैयार करते हैं साथ ही नवाचार, प्रबधन, अनुसंधान, मूल्यांकन और मार्गदर्शन भी करते हैं।

माता–पिता मानव जीवन सम्भव बनाता है तथा उनमें संवेग, तर्क शक्ति, बात–चीत करने की शक्ति, बुद्धि, विकासात्मक गुण, आन्तरिक शक्ति तथा कार्यात्मक क्षमता का समावेश करता है। व्यक्ति जिन गुणों एवं विशेषताओं को अपने माता–पिता से प्राप्त करता है वे गुण एवं विशेषतायें माता–पिता की विशेषतायें होती है।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में सर्वाधिक बल संज्ञानात्मक एवं गत्यात्मक परिक्षेत्रों के उद्देश्यों की सम्प्राप्ति पर है। परिणामस्वरूप विद्यार्थी एवं अध्यापक इन्हें पूरा करने के लिए ज्ञान एवं कौशलों की सम्प्राप्ति को ध्यान में रखकर ही पाठ्यविषयों की योजना तैयार करते हैं। इस कारण एक परिक्षेत्र जिसका संबंध भावना, संवेगों पर नियन्त्रण, मूल्यों की स्थापना, निर्णायक शक्ति आदि से संबंधित है, द्वितीयक बनता जा रहा है। परिणामतः ईर्ष्या, द्वेष, मूल्यहीनता, संवादहीनता आदि अधिक प्रभावी होकर मनुष्य को वास्तविक अर्थों में मनुष्य बनाने में बाधा उत्पन्न कर रहे हैं। साथ ही उसके अन्दर मानवोचित गुणों यथा – सामाजिकता, मूल्य, संवाद की क्षमता, संवेदना, संवेगों पर नियन्त्रण, सहिष्णुता, परहित, शान्तिप्रियता, संतोष आदि को विकसित नहीं होने दे रहे हैं इसका प्रभाव शैक्षिक संस्थाओं सामाजिक सम्बन्धों एवं व्यक्ति के स्वयं के जीवन पर अत्यन्त नकारात्मक ढंग से पड़ रहा है। अतः पूर्व अध्ययनो से पता चलता है कि पारिवारिक वातावरण का संवेगात्मक बुद्धि पर सीधा एवं सार्थक प्रभाव पड़ता है। जिसमें पूर्व अध्ययनों से यह सिद्ध होता है जिसमें **शर्मा, अंजु एवं सहनी, मधु (2013)** के शोध से पता चलता है कि माता–पिता जो अपने बच्चों को नियंत्रित करने के बजाए दिशा–निर्देश देते है और अपने पारिवारिक निर्णय में सहभागी बनाते है वे बच्चे संवेगात्मक बुद्धि में उच्च स्तर को प्राप्त करते है। **चन्द्रन, अर्चना एवं नैयर, बिन्दू पी. (2015)** के शोध परिणाम, किशोरों का पारिवारिक वातावरण का उनके संवेगात्मक बुद्धि के विभिन्न आयामों से सार्थक सम्बन्ध है, सिवाय अन्तर्वैयक्तिक गुण के। किशोरों के संवेगात्मक बुद्धि के आक्रामक विश्लेषण बताते है कि मातृक प्रभाव एवं रिश्ते किशोरों के संवेगात्मक बुद्धि एवं अन्तर्वैयक्तिक गुण को सार्थक रूप से प्रभावित करते है जबकि पैतृक प्रभाव किशोरों के वैयक्तिक गुणों के भिन्नता से जुड़ा है। **मिर्जाहुसैनी, हसन (2016)** ने अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि परिवार के संवेगात्मक वातावरण का विद्यार्थियों से सार्थक रूप से जुड़ाव है। स्पष्ट रूप से हम पाते है कि परिवार की संवेगात्मक बुद्धि, खुशी एवं प्रेरणा विद्यार्थियों में अहम् भूमिका निभाते है। **कुमार, अशोक एवं कंशल, हरिश (2018)** ने शोध अध्ययन के निष्कर्ष में इंगित किया कि – संवेगात्मक बुद्धि का सम्बन्ध सामाजिक बुद्धि से है जहाँ व्यक्ति विभिन्न संवेगों का प्रत्यक्षीकरण अपनी क्षमता के अनुसार करता है। व्यक्ति की अपनी योग्यताएँ उसके संवेगात्मक बुद्धि के समुचित उपयोग के लिए उत्तरदायी होती है। जहाँ तक किशोरावस्था के बालक–बालिकाओं में संवेगात्मक विकास की बात है यह अति आवश्यक जान पड़ता है क्योंकि किशोरावस्था विकास विभिन्न रूपों में दिखाई पड़ता है। जो कि सकारात्मक भी है और नकारात्मक भी। माता–पिता के आपसी सम्बन्ध का प्रभाव भी किशोरावस्था के बालक–बालिकाओं के संवेगात्मक बुद्धि पर पड़ता है। पारिवारिक वातावरण का प्रभाव व्यक्ति के संवेगात्मक बुद्धि में परिवर्तन कर सकता है। **ए.आर., उन्नीकृष्णन (2019)** ने अध्ययन के निष्कर्ष में इंगित किया कि– बच्चे के किसी भी विकासात्मक चरण के दौरान घर के वातावरण के महत्व को नकारा नहीं जा सकता है। घर का वातावरण बच्चे के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। किशोरों की मनोसामाजिक क्षमता पर घर के वातावरण का महत्वपूर्ण प्रभाव देखा गया है। आत्म–अवधारणा दूसरों द्वारा आकार लेती है और पर्यावरण भावनात्मक परिपक्वता घर के वातावरण, विद्यालय के वातावरण, समाज और संस्कृति जैसे कई कारकों के बीच अंतःक्रिया का उत्पाद है।

अध्ययन का उद्देश्य–

समस्या कथन के आधार में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है–

1. बी0एड0 स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. बी0एड0 स्तर के शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. बी0एड0 स्तर के ग्रामीण विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ–

उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है–

1. बी0एड0 स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर पारिवारिक वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।
2. बी0एड0 स्तर के शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर पारिवारिक वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।
3. बी0एड0 स्तर के ग्रामीण विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर पारिवारिक वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।

शोध–विधि–

अध्ययन में शोध विधि के लिए वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सहसम्बन्धात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

जनसंख्या–

वर्तमान अध्ययन में प्रयागराज परिक्षेत्र में स्थित विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयों में संचालित शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों में अध्ययनरत् बी0एड0 स्तर के छात्र/छात्राओं को जनसंख्या के रूप में किया गया है।

न्यादर्श–

प्रस्तुत अध्ययन हेतु आवश्यक प्रदत्तों को प्राप्त करने के लिए स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्शन विधि का प्रयोग करके कुल 600 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया। जिसमें से 300 छात्र एवं 300 छात्राएँ का चयन किया गया है।

प्रयुक्त शोध उपकरण–

अनुकुल हाइड, संजोत पेठे और उपिंदर धर (2002) द्वारा इमोशनल इंटेलिजेंस स्केल (ईआईएस) कूपर और सॉवाफ (1997) द्वारा फोर–कॉर्नरस्टोन मॉडल पर आधारित ''संवेगात्मक बुद्धि मापनी'' तथा हरप्रीत भाटिया एवं एन.के. चढ्ढा द्वारा निर्मित ''पारिवारिक वातावरण मापनी'' का प्रयोग किया गय है।

प्रयुक्त सांख्यिकी विधियाँ–

आँकड़ों के विश्लेषण हेतु एनोवा (प्रसरण विधि) तथा टी–अनुपात विधियों का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

1. बी0एड0 स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन–

H_{01} बी0एड0 स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर पारिवारिक वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।

टेबल–1

उन्नत, औसतन एवं अनुन्नत पारिवारिक वातावरण वाले बी0एड0 स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के मध्य प्रसरण–मान

Source	df	SS	MS	F	Table Value
Between Groups	2	11376.74	5688.37	37.45*	.01(2,597) =4.71
Within Groups	598	90836.03	151.90		
Total	600	102212.78	5840.27		

*.01 पर सार्थक

उन्नत, औसतन एवं अनुन्नत पारिवारिक वातावरण वाले बी0एड0 स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के मध्य एफ–मान 37.45 जो .01 स्तर = 4.77 से अधिक है अर्थात् सार्थक पाया गया। परिणामतः उन्नत, औसतन एवं अनुन्नत पारिवारिक वातावरण वाले बी0एड0 स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के मध्य विषमता है।

टेबल–1.1

उन्नत, औसतन एवं अनुन्नत पारिवारिक वातावरण वाले बी0एड0 स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के मध्यमानों के बीच टी–अनुपात

S.No.	Level	N	M	S_D	D	t-value
1.	High	159	121.25	1.22	5.13	4.22*
	Moderate	288	116.12			
2.	High	159	121.25	1.39	12.01	8.62*
	Low	154	109.24			
3.	Moderate	288	116.12	1.23	6.88	5.59*
	Low	154	109.24			

*.01 स्तर पर सार्थक

उन्नत, औसतन एवं अनुन्नत पारिवारिक वातावरण वाले बी0एड0 स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के मध्यमानों के बीच टी–मान क्रमशः 4.22, 8.62 एवं 5.59 है, जिसमें उन्नत एवं अनुन्नत पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियों के मूल्य अभिविन्यास के मध्य टी–मान .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। परिणामतः उन्नत पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियों की मूल्य अभिविन्यास अनुन्नत पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है तथा औसतन पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि अनुन्नत पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है।

2. बी0एड0 स्तर के शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन–

H_{02} बी0एड0 स्तर के ग्रामीण विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर पारिवारिक वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।

टेबल–2

उन्नत, औसतन एवं अनुन्नत पारिवारिक वातावरण वाले बी0एड0 स्तर के शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के मध्य प्रसरण–मान

Source	df	SS	MS	F	Table Value
Between Groups	2	3630.99	1815.49	15.39*	.01(2,297) =4.66
Within Groups	297	35030.54	117.95		
Total	299	38661.53	1933.44		

*.01 पर सार्थक

उन्नत, औसतन एवं अनुन्नत पारिवारिक वातावरण वाले बी0एड0 स्तर के शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के मध्य एफ–मान 15.39 जो .01 स्तर = 4.77 से अधिक है अर्थात् सार्थक पाया गया। परिणामतः उन्नत, औसतन एवं अनुन्नत पारिवारिक वातावरण वाले बी0एड0 स्तर के शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के मध्य विषमता है।

टेबल–4.28.1

उन्नत, औसतन एवं अनुन्नत पारिवारिक वातावरण वाले बी0एड0 स्तर के शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के मध्यमानों के बीच टी–अनुपात

S.No.	Level	N	M	S_D	D	t-value
1.	High	75	123.17	1.54	2.46	1.60
	Moderate	147	120.71			
2.	High	75	123.17	1.76	9.22	5.25*
	Low	78	113.95			
3.	Moderate	147	120.71	1.52	6.77	4.45*
	Low	78	113.95			

*.01 स्तर पर सार्थक

उन्नत, औसतन एवं अनुन्नत पारिवारिक वातावरण वाले बी0एड0 स्तर के शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के मध्यमानों के बीच टी–मान क्रमशः 1.60, 5.25 एवं 4.45 है, जिसमें उन्नत एवं अनुन्नत एवं औसतन एवं अनुन्नत पारिवारिक वातावरण वाले शहरी विद्यार्थियों के मूल्य अभिविन्यास के मध्य टी–मान .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। परिणामतः उन्नत एवं औसतन पारिवारिक वातावरण वाले शहरी विद्यार्थियों की मूल्य अभिविन्यास अनुन्नत पारिवारिक वातावरण वाले शहरी विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है तथा औसतन पारिवारिक वातावरण वाले शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि अनुन्नत पारिवारिक वातावरण वाले शहरी विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है।

3. बी0एड0 स्तर के ग्रामीण विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन–

H_{03} बी0एड0 स्तर के ग्रामीण विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर पारिवारिक वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं है।

टेबल–3

उन्नत, औसतन एवं अनुन्नत पारिवारिक वातावरण वाले बी0एड0 स्तर के ग्रामीण विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के मध्य प्रसरण–मान

Source	df	SS	MS	F	Table Value
Between Groups	2	3437.58	1718.79	13.21*	.01(2,297) =4.66
Within Groups	297	38649.65	130.13		
Total	299	42087.24	1848.92		

**.01 पर सार्थक*

उन्नत, औसतन एवं अनुन्नत पारिवारिक वातावरण वाले बी0एड0 स्तर के ग्रामीण विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के मध्य एफ–मान 13.21 जो .01 स्तर = 4.77 से अधिक है अर्थात् सार्थक पाया गया। परिणामतः उन्नत, औसतन एवं अनुन्नत पारिवारिक वातावरण वाले बी0एड0 स्तर के ग्रामीण विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के मध्य विषमता है।

टेबल–3.1

उन्नत, औसतन एवं अनुन्नत पारिवारिक वातावरण वाले बी0एड0 स्तर के ग्रामीण विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के मध्यमानों के बीच टी–अनुपात

S.No.	Level	N	M	S_D	D	t-value
1.	High	75	117.44	1.62	5.60	3.45*
	Moderate	146	111.84			
2.	High	75	117.44	1.84	9.39	5.11*
	Low	79	108.05			
3.	Moderate	146	111.84	1.59	3.79	2.38
	Low	79	108.05			

*.01 स्तर पर सार्थक

उन्नत, औसतन एवं अनुन्नत पारिवारिक वातावरण वाले बी0एड0 स्तर के ग्रामीण विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के मध्यमानों के बीच टी–मान क्रमशः 3.45, 5.11 एवं 2.38 है, जिसमें उन्नत एवं अनुन्नत तथा उन्नत एवं औसतन पारिवारिक वातावरण वाले ग्रामीण विद्यार्थियों के मूल्य अभिविन्यास के मध्य टी–मान .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। परिणामतः उन्नत पारिवारिक वातावरण वाले ग्रामीण विद्यार्थियों की मूल्य अभिविन्यास औसतन एवं अनुन्नत पारिवारिक वातावरण वाले ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है तथा औसतन एवं अनुन्नत पारिवारिक वातावरण वाले ग्रामीण विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में समानता है।

निष्कर्ष–

अध्ययनोपरान्त निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

- उन्नत, औसतन एवं अनुन्नत पारिवारिक वातावरण वाले बी0एड0 स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के मध्य विषमता है अर्थात् बी0एड0 स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर पारिवारिक वातावरण का प्रभाव है।
- उन्नत, औसतन एवं अनुन्नत पारिवारिक वातावरण वाले बी0एड0 स्तर के शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के मध्य विषमता है अर्थात् बी0एड0 स्तर के शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर पारिवारिक वातावरण का प्रभाव है।
- उन्नत, औसतन एवं अनुन्नत पारिवारिक वातावरण वाले बी0एड0 स्तर के ग्रामीण विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के मध्य विषमता है अर्थात् बी0एड0 स्तर के ग्रामीण विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर पारिवारिक वातावरण का प्रभाव है।
- बी0एड0 स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि पर पारिवारिक वातावरण का प्रभाव पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- कर्थीकेयान, पी. (2015). रोल ऑफ टीचर्स इन डेवेलपमेण्ट इमोशनल इंटेलिजेन्स एमंग द चिल्ड्रेन, *शंलक्स इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एजूकेशन*, वॉ0 3, नं0 2, पृ0 1–5
- कुमार, अशोक एवं कंशल, हरिश (2018). किशोरावस्था के बालक–बालिकाओं के संवेगात्मक बुद्धि पर माता–पिता के सम्बन्धों का प्रभाव का अध्ययन, *इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांसड एजूकेशनल रिसर्च*, वॉल्यूम–3, इश्शू–2, पृ0 74–78
- कुमार, प्रवीण एवं शर्मा, दिनेश (2017). शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में संवेगात्मक बुद्धि की भूमिका : एक अध्ययन, *श्रृंखला एक शोधपरक वैचारिक पत्रिका*, वॉल्यूम–5, इश्शू–4, पृ0 172–175
- चन्द्रन, अर्चना एवं नैयर, बिन्दू पी. (2015). फैमिली क्लाइमेट एस ए प्रेडिकेटर ऑफ इमोशनल इंटेलिजेन्स इन एडोल्वसेन्ट्स. *जर्नल ऑफ द इण्डियन ऐकेडिमक ऑफ एप्लाइड सॉइकोलॉजी*, 41(1). 167–173
- दूबे, शिवेन्द्र एवं ठाकुर, जसवंत सिंह (2015). कम्प्रेटिव स्टडी ऑफ इमोशनल इंटेलिजेन्स एमंग द स्टूडेन्ट ऑफ डिफरेन्ट टीचर ट्रेनिंग कोर्स, *इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ फीजिकल, स्पोर्ट्स एण्ड हेल्थ*, 2(1), 180–183
- पैत्रा, स्वाती (2004). इमोशनल इंटेलीजेंस इन एजूकेशन मैनेजमेंट, वाल्यूम–XXX, *जर्नल ऑफ इण्डियन एजुकेशन*, एन.सी.ई.आर.टी. पी.पी. 98–104।
- मिर्जाहुसैनी, हसन (2016). सर्वेयिंग द रिलेशनशिप ऑफ फैमिली इमोनशनल एटमॉसफियर विथ इमोशनल इंटेलिजेन्स एण्ड हैप्पिनेस ऑफ स्टूडेन्ट्स. *द कैसपियन सिस जर्नल*, 10(1). सप्लीमेन्ट 4, 07–11
- शर्मा, अंजु एवं सहनी, मधु (2013). इमोशनल इंटेलिजेन्स इन रिलेशन टू होम इन्वायरमेन्ट एण्ड पर्सनालिटी ऑफ एडोल्वसेन्ट्स. *इन्टरनेशनल वुमैन ऑनलाइन जर्नल ऑफ डिस्टेन्स एजुकेशन.* 2(1) : 1. 1–16